महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

---

गैर-बराबरी पर आधारित दुनिया बहुत बदसूरत होगी- कुलपति विभूति नारायण राय

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और न्यायपूर्ण विश्व पर भारतीय सामाजिक विज्ञान कॉंग्रेस का 35वां पांच दिवसीय अधिवेशन वर्धा में प्रारंभ

वर्धा दि. 27 दिसंबर 2011: दुनिया में गैर-बराबरी में भारत और दक्षिण अफ्रीका की स्थिति सबसे निचले पायदान पर है। आज दुनिया में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और न्यायपूर्ण विश्व भी लुप्त होता चला जा रहा है। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में भारतीय सामाजिक विज्ञान कॉंग्रेस का यह अधिवेशन गैर-बराबरी पर आधारित समाज के लिए संभावना तलाशने के लिए उपयुक्त स्थान साबित होगा। वर्धा में हम शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए सारी विविधताओं की रक्षा कर सकते हैं। उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूति नारायण राय ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी तथा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय (27-31 दिसंबर) भारतीय सामाजिक विज्ञान कॉंग्रेस के 35वें अधिवेशन में अधिवेशन के उदघाटन के अवसर पर स्वागत भाषण में किये। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. टी. करूणाकरण ने की। समारोह में दत्ता मेघे आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रो-चांसलर डॉ. वेदप्रकाश मिश्र, भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी

के महासचिव प्रो. एन. पी. चौबे, श्रीलंका के गांधीवादी विचारक डॉ. ए. टी. आर्यरत्ने, वीएनआईटी डायरेक्टर अधिवेशन के स्थानीय सचिव प्रो. मनोज कुमार मंचासीन थे।

अधिवेशन के लिए विभिन्न स्थानों से आए विद्वान और प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कुलपति राय ने कहा कि वर्धा में गांधी जी ने अपने जीवन के अंतिम 12 वर्ष बिताए थे। वर्धा को गांधी ने सैध्दांतिकी प्रयोगशाला का केंद्र बनाया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा, चरखा, स्वावलंबन और हिंदी के लिए पूरे राष्ट्र को वैचारिकी दी। डॉ. एस. एस. गोखले, न्यूपा के चेअरमैन डॉ. के. के. चक्रवर्ती, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे,

प्रो. एन. पी. चौबे ने सामाजिक विज्ञान अकादमी की स्थापना के कारणों की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि सामाजिक विज्ञान सभी विज्ञानों का एक सामूहिक प्रयास है। उन्होंने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और न्यायपूर्ण विश्व के बारे में गांधी जी के विचारों का संदर्भ देते हुए कहा कि गांधी को गांधीवादीयों से मुक्त रखना होगा और मनुष्य निर्मित समस्याओं का दूर करने से ही सहअस्तित्व का संतुलन बना रहेगा, क्योंकि पृथ्वी नैसर्गिक उपादान दी है। इस संस्था की स्थापना 15 अगस्त 1974 में इलाहाबाद में हुई और भारत के लिए नए विज्ञान की खोज का जन्म हुआ। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परिवर्तन तथा शांति के लिए वर्धा में किया गया यह आयोजन विज्ञान का नया एजेंडा तैयार करेगा।

न्यूपा के चेअरमैन तथा पूर्व आईएस अधिकारी के. के. चक्रवर्ती ने अधिवेशन की थिम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि राजनीतिक स्वराज तो प्राप्त हो चुका है, भावनात्मक स्वराज खो चुका है। बिना इसे प्राप्त किये न्यायपूर्ण विश्व की परिकल्पना संभव नहीं है।

प्रो. वेद प्रकाश मिश्र ने अपने सारगर्भित और विषयानुकुल वक्तव्य में कहा कि नीड और ग्रीड का रियल कंफ्लिक्ट सह अस्तित्व के लिए बहुत बडी बाधा है। क्योंकि खुदा ने जब धरती बनायी तब सरहदें नहीं थी। हमीं ने इस धरती को हिंदुस्तान और इरान बनाया। सरहदों के बीच मानवीय द्वंद्व का निवारण ही सहअस्तित्व का संगम है। उन्होंने कहा कि बाजार के आधार पर न्यायपूर्ण विश्व यूटोपिया है। जागतिक अवधारणा इससे संभव नहीं है। बाजार बिल के आधार पर चलता है और न्यायपूर्ण विश्व के लिए बाजार से अलग मानवीय दुनिया में दिल से दिल मिलना ही सहअस्तित्व की परिकल्पना को साकार कर सकता है। इस अवसर पर श्रीलंका से आए गांधी विचारक ए. टी. आर्यरत्ने ने कहा कि बुध्द, सम्राट अशोक, महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा भावे, श्री जयप्रकाश नारायण , प्रो. जी. रामचंद्रन, स्वामी विवेकानंद तथा कृष्णमूर्ती ये मेरे प्रेरणास्रोत हैं जो सभी भारत के सुपूत्र हैं। उन्होंने नव उदारवादी सिध्दांत, वैश्विक पूंजी, समाजवाद आदि का हवाला देते हुए शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. टी. करूणाकरन ने दलित, आदिवासी और महिलाएं, मूलभूत संसाधनों, विशेष आर्थिक क्षेत्र, सामान्य संपदा संसाधनों, श्रमिक, बेरोजगारी तथा मजदूरी आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा करते हुए इस समस्याओं से निजात पाने के लिए गांधी विचार के रास्ते पर चलने का आह्वान किया। समारोह का प्रारंभ गांधी जी का प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए..' से हुआ। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र ने किया तथा

धन्यवाद ज्ञापन अधिवेशन के स्थानीय सचिव प्रो. मनोज कुमार ने किया। इस अवसर देशभर से आए समाजविज्ञानी , विचारक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

<u>बॉक्स मैटर</u> : इस अवसर पर जेएनयू के प्रोफेसर पी. एस. रामाकृष्णा को पर्यावरण और पारिस्थितिकी विज्ञान पर रचनात्मक योगदान के लिए पी. वी. सुखात्मे स्वर्ण पदक तथा सीएसआईआर के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. आर. एलेंगो को तमिलनाडु के गरीब बस्तियों में विज्ञान के रास्ते समाज को सुगठित करने के लिए भी स्वर्ण पुरस्कार से नवाजा गया।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी